Dr.Raman Kumar Thakur
Assistant professor (Guest)
Department of Economics
D.B.college jaynagar,
MadhubaniL.N.M.U.Darbhanga.

Class:-B.A.part-2(Hons)
Date:-09 may 2020

" प्रथम पंचवर्षीय योजना"

(First Five year Plan (1 अप्रैल, 1951 से 31 मार्च 1956 तक)

→भारत के प्रथम पंचवर्षीय योजना 1 अप्रैल 1951 से प्रारंभ हुई थी जबकि इस योजना का अंतिम प्रारूप दिसंबर 1952 में प्रकाशित किया गया था। इस योजना के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित थे:-
1) द्वितीय विश्व युद्ध तथा देश के विभाजन के फलस्वरुप हुई क्षतिग्रस्त अर्थव्यवस्था का पुनरुत्थान करना।

2) स्फीति कारक प्रवृत्तियों को रोकना।

3) देश की अर्थव्यवस्था को इस प्रकार से सफल बनाना कि भविष्य में द्रुत गति से आर्थिक विकास संभव हो सके । अर्थात सड़कों का निर्माण करना ,परिवहन एवं संचार की सुविधाएं उपलब्ध कराना, सिंचाई एवं जल विद्युत परियोजनाओं का निर्माण करना आदि ।

4) उत्पादन क्षमता में वृद्धि तथा आर्थिक विषमता को यथासंभव कम करना

5) खाद्यान्न संकट का समाधान करना तथा कच्चे मालों, विशेषकर पटसन एवं रुई की स्थिति को सुधारना।

6) ऐसी प्रशासनिक एवं अन्य संस्थाओं का निर्माण करना जो कि देश के विकास कार्यक्रमों को लागू करने के लिए आवश्यक हो।

प्रथम पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत 5 वर्षों की अवधि में कुल 2378 करोड रुपए करने की व्यवस्था की गई थी किंतु योजना अवधि में केवल 1960 करोड़ रुपए ही व्यय किए गए जो कुल व्यय का 44.6 परसेंट व्यय सार्वजनिक क्षेत्र के लिए निर्धारित किया गया था इस योजना में कृषि को उच्चतम प्राथमिकता प्रदान की गई।
इस योजना में प्राप्ति लक्ष्यों से अधिक थी योजना अवधि में राष्ट्रीय आय में वार्षिक वृद्धि की चक्रवृद्धि दर 1993 94 की कीमतों पर 3.6 परसेंट करोड प्रति व्यक्ति आय में 1.8% की वृद्धि हुई तथा वृद्धिमान पूंजी उत्पाद अनुपात 2.95 :1 रहा। पूंजी निवेश की दर राष्ट्रीय आय के 5 परसेंट से बढ़ाकर 7 परसेंट

करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया ।

" द्वितीय पंचवर्षीय योजना"
(Second five year plan)
(1 अप्रैल 1956 से 31 मार्च 1961 तक)

→भारतीय सांख्यिकी संगठन कोलकाता के निदेशक प्रो. पी.सी. महालनोविस के मॉडल पर आधारित द्वितीय पंचवर्षीय योजना 1 अप्रैल 1956 से लागू की गई तथा 31 मार्च 1961 को समाप्त हुई। इस योजना का मूलभूत उद्देश्य देश में औद्योगिकरण की प्रक्रिया प्रारंभ करना था जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था का सुदृढ आधार पर सर्वागीण विकास किया जा सके। इसके अतिरिक्त 1956 में घोषित की गई औद्योगिक नीति में समाजवादी ढंग के समाज की अस्थापना को स्वीकार किया गया संक्षेप में दितीय पंचवर्षीय योजना के निम्नलिखित लक्ष्य निर्धारित किए गए थे:-

1) देश के जीवन स्तर को ऊंचा
उठाने के लिए 5 वर्षों में राष्ट्रीय आय में 25% की वृद्धि करना।

2) द्रुतगति से औद्योगिकरण करना जिसमें आधारभूत उद्योगों तथा भारी उद्योगों के विकास पर पर्याप्त बल दिया गया हो

3) रोजगार के अवसरों में वृद्धि करना

4) आय व संपत्ति के असमानता को कम करना तथा आर्थिक शक्ति का अधिक सामान वितरण करना।

5) पूंजी निवेश की दर को 7 परसेंट से बढ़ाकर 1960- 61 तक 11 परसेंट करना।
द्वितीय पंचवर्षीय योजना में सरकारी क्षेत्र में वास्तविक व्यय लगभग 4672 करोड रुपए हुआ।

वित्तीय योजना में 1993 94 की कीमतों पर राष्ट्रीय आय में 4.1 की वार्षिक वृद्धि हुई किंतु प्रति व्यक्ति आय में 2.0% की वार्षिक वृद्धि हुई इस योजनावधि में राष्ट्रीय आय में 25% वृद्धि के लक्ष्य प्राप्ति ना होने का आंशिक कारण योजना में परीकल्पित आशावादी पूंजी उत्पाद अनुपात (Capital- Out put Ratio) महालनोबिस मॉडल में यह 2:1 कल्पित किया गया था ।किंतु वास्तव में यह 1980 -81 की कीमतों पर 3.40:1 का अनुमानित किया गया। द्वित्तीय योजना की कुल परिव्यय की राशि 4672 करोड़ रुपए में से 249 करो रुपए की विदेशी सहायता प्राप्त हुई जो कुल परिव्यय का 24% थी दित्तीय योजना काल में देश में मूल्य स्तर में 30% की वृद्धि हुई जबकि पहली योजना में इसमें 13% की कमी आई।